

ने क्या कार्यवाही की है कि दुर्घटनायें न हों ?

रेलवे मंत्री (श्री शे. सु. पुनाचा) :

(क) 1-1-1967 से 31-12-67 का अवधि में मध्य और पश्चिम रेलों पर टक्कर, टूटी से उतरने, समपार पर गाड़ियों के सड़क यातायात से टकराने और गाड़ियों में भाग लग जाने की कोटि में क्रमशः 106 और 123 गाड़ी दुर्घटनाएं हुईं।

(ख) इनमें से किसी भी मामले में पर्यवेक्षण का न होना दुर्घटना का कारण नहीं ठहराया गया।

(ग) आधुनिक किम्म के सिगनलों आदि का उपयोग करने के अतिरिक्त दुर्घटनाओं को रोकने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं।

Deficit Suffered by Railways

*1012. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Railways suffered a net deficit of Rs. 27 crores during 1966-67;

(b) whether the capacity for carriage of goods was planned far in excess of the demand; and

(c) how much of this loss is due to the competition from road transport operators and how much is due to the general industrial recession?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. M. POONACHA): (a) The net deficit of the Railways during the year 1966-67 was Rs. 18.27 crores.

(b) The capacity planned was for the estimated requirements of Railway transport in accordance with the economic growth anticipated. Traffic did not, however, materialise to the full extent as anticipated on account

of two successive years of drought and their impact on the country's economy. There was some surplus transport capacity in certain sections, mainly those serving the Iron and Steel and Coal Sectors.

(c) No precise figures are available about the effect on Railway earnings of road competition or the slowing down of the industrial sector.

त्रिपोली मेले में भारत द्वारा भाग लिया जाना

*1013. श्री झोंकार लाल बेरवा : क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत ने त्रिपोली मेले में भाग लिया था जो 28 फरवरी, 1968 को प्रारम्भ हुआ था ; और

(ख) यदि हां, तो उसके क्या परिणाम निकले ?

वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री सुहृन्मव शफी कुरैशी) : (क) जी, हां। इस वर्ष 28 फरवरी से 20 मार्च तक हुए सातवें त्रिपोली अन्तर्राष्ट्रीय मेले में भाग लेने का आयोजन तथा समन्वय व्यापारिक मेलों तथा प्रदर्शनियों की भारतीय परिषद्, बम्बई द्वारा किया गया।

(ख) भाग लेने के फलस्वरूप वही पर 10 लाख रुपये के आर्डर बुक किये गये। हमारे निर्यात योग्य उत्पादों के सम्बन्ध में प्रारम्भ की गई पूछताछों पर सम्बन्ध पक्षों द्वारा बातचीत करने तथा और सोदे करने के प्रयत्न जारी हैं। हमारे भाग लेने से जो कुल परिणाम प्राप्त होंगे उनका इतनी जल्दी आकलन नहीं किया जा सकता।

Prices of Cloth

*1014. SHRI DEORAO PATIL: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that only

25 per cent of the cloth produced by the Textile Mills, is controlled and yarn produced by mills is totally uncontrolled;

(b) whether it is also a fact that the prices of controlled varieties of cloth are based on maximum prices paid for cotton by the textile mills and not on minimum support prices fixed therefor; and

(c) if so, whether Government propose to fix the purchase price-cum-remunerative price for raw cotton for the next season?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF COMMERCE (SHRI MOHD. SHAFI QURESHI): (a) Production and prices of certain varieties of mill-made cotton cloth, comprising at present roughly 40 per cent of production are controlled. There is no such control on cotton yarn.

(b) The current prices of controlled cloth have been fixed on the basis of the ceiling prices of cotton at the time of last revision.

(c) While deciding the price-policy for cotton for the next season, the interest of the grower to receive a fair remuneration for his cotton will *inter-alia* be given due consideration.

धातु निकालना

*1015. श्री महारणज सिंह भारती : क्या इस्पात, खान तथा धातु मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि प्रयोगात्मक गवेषणा के आधार पर तांबे, जस्ते, निकल, सीसे की बाल्ट तथा एन्टीमनी के जिन निक्षेप का पता लगाया गया है यदि उन्हें निकाला जाये तो उससे न केवल देश की आवश्यकता पूरी होगी, बल्कि इन धातुओं का निर्यात भी किया जा सकेगा;

(ख) यदि हां, तो इन धातुओं के निकालने में क्या कठिनाइयां पेश आ रही हैं ; और

(ग) उक्त योजना की क्रियान्विति में ढील के क्या कारण हैं ?

इस्पात, खान तथा धातु मंत्री (डा० बल्लभ रेड्डी) : (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रखा गया है । [पुरतत्कालमें मैं रक्षा विध. स.दा । दक्षिण सभ्या L.T-706/68]

रेलवे में कुत्तों के दस्ते

*1016. श्री हुसैन खान कछवाय : क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि माल की चोरी का पता लगाने के लिये रेलवे के सभी डिवीजनों में कुत्तों के दस्ते हैं ;

(ख) यदि हां, तो सभी रेलों में इस समय कुत्तों के कुल कितने दस्ते हैं ;

(ग) इन कुत्तों पर प्रति वर्ष सरकार कितना व्यय कर रही है ; और

(घ) पिछले सात वर्षों में इन कुत्तों द्वारा चोरी के कितने मामलों का पता लगाया गया ?

रेलवे मंत्री (श्री. जे० मु० पुनावा) : (क) जी हां, दक्षिण मध्य रेलवे को छोड़ कर । इस रेलवे पर शीघ्र ही रेलवे सुरक्षा दल का एक कुत्ता-दस्ता बनाने का विचार है ।

(ख) 27.

(ग) रेलवे सुरक्षा दल के कुत्ता-दस्तों और उन्हें सम्हालने वालों के भ्रमरक्षण पर प्रति वर्ष लगभग 1.23 लाख रुपये खर्च किये जा रहे हैं ।

(घ) 274.